P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विद्यालयीन शिक्षा में ई–सूचना स्रोतों, एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोतों की उपयोगिता का अध्ययन

राजलक्ष्मी पाण्डेय
शोधार्थी,
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग,
डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, भारत

संगीता सिंह
पुस्तकालयाध्यक्षा एवं विभागाध्यक्षा,
पु. एवं सू. वि. विभाग,
डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, भारत

सारांश

वर्तमान युग सूचना विस्फोट का युग है। अत्यधिक संख्या में सूचनाओं के उत्पादन के कारण आवश्यक सूचनाओं को खोजना एक दुर्लभ कार्य हो गया है। परन्तु इस कार्य में ई–सूचना स्रोतों का प्रार्दुभाव होने से अत्यधिक सहायता मिल रही है। ई–सूचना स्रोतों से सूचनाओं को खोजना अत्यन्त सरल है। प्रस्तुत शोध लेख में विद्यालयीन शिक्षा में ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता का अध्ययन इसी आशय से किया गया है। भारत देश के परिदृश्य को देखते हुय केन्द्रीय विद्यालयो, नवोदय विद्यालयों, राजीव गांधी शिक्षा मिशन, सर्वशिक्षा अभियान एवं अन्य विद्यालयों में ई–सूचना स्रोतो एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोतों की उपलब्धता का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : ई–सूचना स्रोत, मल्टीमीडिया सूचना स्रोत, डिजीटल सूचना स्रोत, विद्यालयीन शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा, के.व्ही.एस. ज्ञान कोश, नई डिजीटल पहल, नवोदय विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय।

प्रस्तावना

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। इसी कारण वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में परंपरागत सूचना स्रोतों की तुलना में ऑनलाईन सूचना स्रोत, डिजीटल सूचना स्रोत, ई–सूचना स्रोतों एवं इनसे ज्ञान की पुनः प्राप्ति हेतु दी जाने वाली सूचना सेवाओं का महत्व अधिक हो गया है, चूकि यह सूचना विस्फोट का युग है, और प्रत्येक उपयोक्ता को उसकी सूचना से अवगत होना या कराना परंपरागत सूचना स्रोतों की सीमाओं में संभव नहीं है। इन्ही आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये भारत सरकार ने भी राष्ट्रीय डिजीटल पुस्तकालय एवं अन्य ई–सूचना सेवाओं/आनलाईन सूचना सेवाओं को प्रारंभ किया है। इसके अलावा भी भारत में विभिन्न स्तरों की शिक्षा से संलग्न संगठनों के द्वारा कन्सोरटिया के माध्यम से ई–सूचना स्रोत उपलब्ध कराये जा रहे हैं। भारत में विभिन्न राज्यों की सरकारें इन ई–सूचना स्रोतों की अभिगम्यता हेतु मोबाईल फोन, टेबलेट, लेपटाप, एवं अन्य इलेक्ट्रानिक गजेट्स उपलब्ध करा रही है। इलेक्ट्रानिक सूचनाओं एवं सूचना सेवाओं की उपयोगिता को देखते हुये भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय अधीन विभिन्न संगठन, आयोग एवं विभाग इस हेतु अनुदान राशि उपलब्ध करा रहे है। इनमें से प्रमुख संगठन इस प्रकार हैः

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)
2. राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (NIC)
3. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल (CBSE)
4. केन्द्रीय विद्यालय संगठन (KVS)
5- नवोदय विद्यालय समिति (NVS)
6. एनसीईआरटी (NCERT)
7. राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (NKN)
8. सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क (INFLIBNET)
9. विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभाग
10. विभिन्न राज्यों के उच्च शिक्षा विभाग

यह सभी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से ई–सूचना स्रोत, आनलाईन सूचना स्रोत, मल्टीमीडिया सूचना स्रोत एवं इनसे संबंधित विभिन्न ई–सूचना सेवायों हेतु धन राशि उपलब्ध कराते है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैः

1. विद्यालयीन शिक्षा हेतु उपलब्ध ई–सूचना स्रोतों एवं मल्टीमीडिया स्रोतों की उपलब्धता का अध्ययन करना।
2. विद्यालयीन शिक्षा हेतु उपलब्ध ई–सूचना स्रोतों की उपयोगिता का अध्ययन करना। एवं
3. ई–सूचना स्रोतों के उपयोग के लाभों का अध्ययन। एवं
4. ई–सूचना स्रोतों के उपयोग में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन।
5. इन विद्यालयों में उपयोगकर्ताओं के ई सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन करना तथा ई–सूचना स्रोतों तथा मल्टीमीडिया सूचना स्रोतो की उनकी शैक्षणिक उत्कृष्टता पर प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
6. ई–सूचना स्रोतों के माध्यम से विद्यालयीन शिक्षा की उत्कृष्टता पर प्रभावशीलता का अध्ययन।

साहित्यावलोकन

Dhawan (1997) इस पुस्तक में मल्टी मीडिया पुस्तकालयों से अवधारणा के परिपेक्ष्य में जानकारियां दी गयी है। इस प्रकार के पुस्तकालयों हेतु आवश्यक नेटवर्क हार्डवेअर एवं साफटबेअर से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी गयी है। आनलाईन डाटाबेस एवं आनलाईन कम्प्यूटरीकृत पुस्तकालय सेवाओं की जानकारियां भी दी गयी है।

Singh and Senger (2010) इस पुस्तक में डिजीटल पुस्तकालय की अवधारणाए, इसके लिये चुनौतियां, इसमें कर्मचारियों की व्यवस्था, योजना एवं मूल्य नियंत्रण आदी पक्षों पर सारगर्भित जानकारी संग्रहित की गयी है। डिजीटल पुस्तकालय का अन्य प्रकार की पुस्तकालय सेवाओं से अन्तर संबंध एवं इन्टरनेट तथा बेब पोर्टल से संबंधित सभी पक्षों पर पुस्तक में पाठ्य सामग्री संग्रहित की गयी है। डिजीटल पुस्तकालय के प्रबंधन से संबंधित सभी पक्षों पर पुस्तक में प्रमुखता से सूचनाओं को संग्रहित किया गया है।

Deepak (2016) शोधार्थी ने विद्यालय पुस्तकालय की वर्तमान स्थिति एवं वहां के प्रबंधन पर पांडुचेरी राज्य के विशेष संदर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन किया है। विद्यालय पुस्तकालय के क्षेत्र में अध्ययन एवं अनुसंधान की दृष्टि से शोध प्रबंध उपयोगी है।

Issac (2017) शोधार्थी ने अपने शोध प्रबंध में विद्यालयों में विशेष रूप से केन्द्रीय विद्यालयों मे परंपरागत मुद्रित सूचना स्रोतों एवं ई–सूचना स्रोतों के संग्रह विकास पर सारगर्भित जानकारी दी है।

उक्त साहित्य शोध पत्र के विषय से संबंधित है। परन्तु शोध पत्र के उद्देश्यों को पूरा करने में उपयुक्त नहीं है, इस कमी को दूर करने हेतु शोध पत्र में प्रयास किया गया है।

Nagraja (2017) ने अपने शोध प्रबंध में माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों के परंपरागत सूचना स्रोत, ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोतो से सूचनाओं को प्राप्त करने की अभिरूचि का अध्ययन किया है।

Nirmila (2018) ने अपने शोध प्रबंध में तमिलनाडु के केन्द्रीय विद्यालयों में संग्रह विकास का अध्ययन किया है। मुद्रित सूचना स्रोतों के साथ–साथ ई–सूचना स्रोतों एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोतों के महत्व पर प्रकाश डाला है, संग्रह विकास में इनके योगदान पर सारगर्भित जानकारी दी है।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र से संबंधित तथ्या एवं सूचनाओं को एकत्रित करने के लिये प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रकार के सूचना के स्रोतों का अध्ययन किया गया है। इस प्रकार विद्यालयीन शिक्षा हेतु ई–सूचना स्रोतों की उपलब्धता, उपयोगिता एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता पर प्रभावशीलता से संबंधित सूचनाओं को परंपरागत मुद्रित सूचना स्रोत एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय, स्कूल शिक्षा विभाग, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल, राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय संगठन एवं अन्य विद्यालयीन शिक्षा के शैक्षणिक संस्थानों की वेबसाईट के द्वारा एकत्रित किया गया है।

भारत में विद्यालयीन शिक्षा

भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तरों में विद्यालयीन शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विभिन्न स्तरों की शिक्षा के लिये विद्यालयीन शिक्षा से नीव तैयार होती है। विद्यालयीन शिक्षा से न केवल उच्च शिक्षा हेतु नीव तैयार होती है, बल्कि विद्यालयीन शिक्षार्थियों को समाज का अच्छा नागरिक भी बनाया जाता है। समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व एवं उसके निर्वहन हेतु सजग बनाया जाता है। विद्यालयीन शिक्षा इतनी अधिक महत्वपूर्ण होने के पर उस पर विभिन्न सरकारों द्वारा उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना दिया जाना था। इसका सबसे बढ़ा कारण हमारे देश की जनसख्या भी है।

सन 1976 से पूर्व शिक्षा का पूर्ण दायित्व राज्यों का हुआ करता था। लेकिन 1976 में संविधान में किये गये संशोधन के बाद यह जिम्मदारी राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार में बांट दी गयी। इससे शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक बदलाव नहीं हुआ। वहीं केन्द्र सरकार ने शिक्षा हेतु राष्ट्रीय एवं एकीकृत कार्यक्रम बनाकर शिक्षा को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया। केन्द्र सरकार ने अपने निर्देशन में शैक्षणिक नीतियां एवं कार्यक्रम बनाने एवं उनके कियान्वयन करने का महत्वपूर्ण कार्य कियाा। सन 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई। इसको 1992 में अद्यतन किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत बुनियादी शिक्षा को गुण्वत्तायुक्त बनाने, बालिका शिक्षा, एवं शिक्षा में एकरूपता लाने पर बल दिया गया। इसी के अन्तर्गत नवोदय विद्यालयों जैसे आधुनिक विद्यालयों की स्थापना की गयी। माध्यमिक स्तर की शिक्षा को व्यवसायपरक बनाने एवं उसमें उच्च शिक्षा के विविध प्रकारों की जानकारी देने की व्यवस्था भी की गयी।

भारत में संचलित होने वाली विद्यालयीन शिक्षा को विभिन्न वर्गो में विभाजित किया जा सकता हैः

किंडरगार्टन (बाल शिक्षोद्यान)

इसके माध्यम से 3 से 5 आयुवर्ग के बच्चों को खिलोने एवं खेलों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है।

प्राथमिक शिक्षा

इस वर्ग में 6 से 11 आयुवर्ग के बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इसके अन्तर्गत सभी मूलभूत विषयों की सामान्य जानकारी से अवगत कराया जाता है।

माध्यमिक शिक्षा

इस प्रकार की शिक्षा के अन्तर्गत 11 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को सभी विषयों की सामान्य शिक्षा दी जाती है।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा

इस वर्ग के अन्तर्गत 14 से 18 आयु वर्ग के किशोरों/ किशोरियों को विषयों की कुछ विशिष्ट ज्ञान संबंधी जानकारियों को दिया जाता है।

भारत में विद्यालयीन शिक्षा हेतु किये गये प्रयास

भारत में विद्यालयीन शिक्षा पर बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा है, परन्तु जनसंख्या की समस्या के कारण शिक्षा से उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त नहीं हुये हैं। केन्द्र सरकारों एवं राज्य सरकारों के द्वारा इस हेतु अनेक कार्यक्रम एवं परियोजनाओं को भी स्वीकृति दी गयी है। सरकारों के प्रयास से संचलित मुख्य संगठन एवं समितिया इस प्रकार हैः

1. केन्द्रीय विद्यालय संगठनः
2. नवोदय विद्यालय समिति
3. राजीव गांधी शिक्षा मिशन
4. सर्वशिक्षा अभियान
5. शिक्षा गारंटी योजना
6. माध्यान्ह भोजन योजना
7. राष्ट्रीय बाल भवन
8. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
10. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की शिक्षा
11. जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम
12. प्राथमिक स्तर पर बालिका शिाक्षा हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम
13. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय

इन सभी कार्यक्रमों, परियोजनाओं, परिषदों, समितियों, संगठनों एवं संस्थानों के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने की दिशा में सराहनीय प्रयास किये जा रहे है। इन सभी के माध्यम से परंपरागत मुद्रित सूचना स्रोतों के साथ–साथ ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोतों के संग्रहण हेतु भी प्रयास किये जा रहे है। कन्सोरटिया के माध्यम से भी इन संस्थानों के माध्यम से ई–सूचना स्रोत तथा मल्टीमीडिया सूचना स्रोत उपलब्ध कराये जा रहे है। विद्यालयीन शिक्षा में इन सूचना स्रोतों की उपयोगिता से शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने में आसानी हो रही है।

ई–सूचना स्रोत

ई–सूचना स्रोत परंपरागत मुद्रित सूचना स्रोतों से भिन्न होते हैं, इनमें सूचनायें इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप प्रकाशित होती है। इन सूचना स्रोतों से सूचनाओं को अभिगम्य करना बहुत आसान एवं तेज होता है। आज के इस सूचना विस्फोट के युग में इन सूचना स्रोतों महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है, क्योंकि इन सूचना स्रोतों के लिये बहुत अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती। इन सूचना स्रोतों से लायब्रेरी विथाउट वाल की अवधारणा साकार होती। इन सूचना स्रोतों के उपयोग हेतु पुस्तकालय जाने की आवश्कता नहीं होती। पुस्तकालय में जाये वगैर इन सूचना स्रोतों से पाठक अपने समय अनुसार सप्ताह के सातों दिवस एवं चौबीस घंटे अपनी आवश्यकता की सूचनायें प्राप्त कर सकता है। यह सूचना स्रोत निम्न प्रकार के होते हैंः

ई–पुस्तकें

इनमें सूचना ई–स्वरूप में होती हैं। इनसे सूचनाओं को तेजी से खोजा जा सकता है। इनकी सबसे बढ़ा गुण यह होता है, कि इनको स्थान की आवश्यकता नहीं होती।

ई–पत्रिका/ई–समाचार पत्र

इनका प्रकाशन इलेक्ट्रानिक स्वरूप होता हैं। इनको आनलाईन देखा जा सकता है। इस स्वरूप का सबसे अधिक लाभ यह होता है, कि पत्रिकाओं/समाचार पत्रों के पिछले तिथियों के अंको को सहजता एवं तत्काल खोजा एवं देखा जा सकता है।

ई–शोध पत्रिका

वर्तमान युग में तेजी से अनुसंधान कार्य हो रहे है। अनुसंधान से संबंधित लेखो के प्रकाशन में भी बहुत अधिक वृद्वि हुई है। शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध लेख अनुसंधान कार्यो मे लगे विद्यार्थियों, शोद्यार्थियों, प्राध्यापको एवं वैज्ञानिकों के लिये उपयोगी होते है। शोध पत्रिकाओं में अधिक संख्या में सूचना प्रकाशित होने के कारण इनके उपयोगकर्ताओं तक उनके विषय पर प्रकाशित आवश्यकता की सूक्ष्म सूचनाओं को पहुॅचाना एक दुर्लभ कार्य है, परन्तु ई–शोध पत्रिकाओं से यह कार्य सहज हो जाता है।

ई–कान्टेन्ट

इनमें विषयों की सूचनाओं को मल्टीमीडिया तकनीकि का उपयोग करके आर्कषक स्वरूप में प्रकाशित किया जाता है। किसी भी विषय पर उसकी विषय वस्तु को पाठ्य, दृश्य एवं ध्वनि को सम्मिलित करके प्रस्तुत किया जाता है।

ई–शोध प्रबंध/ई–लधु शोध प्रबंध

इनको भी इलेक्ट्रानिक स्वरूप में आनलाईन उपलब्ध कराया जाता है। पहले संग्रहित पुराने शोध प्रबंधों एवं लधु शोध प्रबंधों को भी डिजीटल स्वरूप परिवर्तित किया जाता है। विशेष रूप इन प्रबंधों को कन्सोरटिया के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। शोधगंगा, विद्यानिधि एवं ब्रिटिसइथोस इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

ई–ग्रंथसूची

वर्तमान में विभिन्न ग्रंथपरक संस्थान ग्रंथसूची को इलेक्ट्रानिक स्वरूप में प्रकाशित कर रहें है। ई–ग्रंथसूची उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से अधिक उपयोगी होती है। इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में ग्रंथसची को प्रकाशित करने का सबसे बढ़ा लाभ यह होता है, कि इनको आसानी से अद्यतन रखना जा सकता है।

इन सभी प्रकार के सूचना स्रातों को सीडी–रोम या अन्य किसी इलेक्ट्रानिक उपकरण में संग्रहित किया जा सकता है, एवं आनलाईन भी उपलब्ध कराया जा सकता है। यह सूचना स्रोतों मुद्रित सूचना स्रोतो के समान

जीर्ण–शीर्ण नहीं होते एवं इनके खोने का डर भी नहीं होता।

विद्यालयीन शिक्षा हेतु उपलब्ध ई–सूचना स्रोत

मानव संसाधन विकास मंत्रालय सभी प्रकार की शिक्षा हेतु एक मुख्य प्रतिनिधि संस्थान है। विद्यालयीन शिक्षा हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय ही वित्त एवं मार्गदर्शन प्रदान करता है। विद्यालयीन शिक्षा हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा विभिन्न वित्तपोषक संस्थानों द्वारा उपलब्ध ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोत इस प्रकार है :

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

भारत में मानव संसाधन विकास विभाग के द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के उदेष्य से 1963 में केन्द्रीय विद्यालयों को स्थापित किया गया। तत्पश्चात इन विद्यालयों के संचालन तथा वित्तीय सहायता के लिये संगठन भी स्थापित किया गया। इस संगठन का नाम केन्द्रीय विद्यालय संगठन रखा गया। इस संगठन का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थापित है। इस संगठन के अन्तर्गत संचलित विद्यालयों में 121000 से अधिक विद्यार्थी तथा 56000 से भी अधिक शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक कर्मचारी कार्यरत है। इतनी बढ़ी संख्या में इस संगठन के उपयोगकर्ता होने के कारण यह आवश्यक है, कि शिक्षा की उत्कृष्टता तथा गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाये। निजी विद्यालयों की तुलना में इन विद्यालयों में शैक्षणिक उत्कृष्टता अधिक प्रभावी हैं। निश्चित रूप से इस उत्कृष्टता को प्रभावी बनाने में पुस्तकालयों का भी योगदान रहता है। पुस्तकालयों में परंपरागत गुद्रित सूचना स्रोतों के साथ–साथ आधुनिक ई–सूचना स्रोत तथा मल्टीमीडिया सूचना स्रोतों का भी शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभवी बनाने में विशेष योगदान रहता है। इस दृष्टि से केन्द्रीय विद्यालय संगठन तथा इनके अन्तर्गत संचलित विद्यालय इस प्रकार के सूचना स्रोतों को अपनी बेबसाइट के माध्यम से तथा अन्य प्रकार से संग्रहित करके शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रभावी बना रहें है। संस्थान द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले प्रमुख ई–सूचना स्रोत तथा मल्टीमीडिया सूचना स्रोत इस प्रकार हैः

के. व्ही. एस. ज्ञानकोश

के.व्ही.एस. ज्ञानकोश में यूट्यूब चैनल के माध्यम से विभिन्न विषयों से संबंधि पक्षों एवं सामाजिक हित से संबंधित वीडियो को उपलब्ध कराया जाता है।

नई डिजीटल पहल

भारत में डिजीटल इंडिया कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी केन्द्रीय विद्यालयों में प्रशासनिक, वित्तीय एवं शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारू रूप से संचालन के लिये नई डिजीटल पहल को प्रारंभ किया गया। इसके अन्तर्गत कार्यालयीन प्रपत्रों का डिजीटाईजेशन करना एवं उनको संरक्षित इत्यादि आदि आते है। नई डिजीटल पहल के अन्तर्गत– शाला दर्पण, आनलाईन प्रवेश, आन स्थानांतरण, ई–आफिस, आन लाईन शुल्क कलेक्शन इत्यादि आते है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के प्रमुख ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोत निम्न प्रकार हैः

1. Biology Channel
2. Chemistry Channel
3. Mathematics Channel
4. Physics Channel
5. These videos can also be accessed on Doordarshan Freedish DTH. Compiete Is available at (Channel 19,20,21 and 22)

इन विभिन्न ई–सूचना स्रोतों का लाभ केन्द्रीय विद्यालय के सभी स्तरों के विद्यार्थियों के द्वारा लिया जाता है। यह सूचना न केवल विद्यार्थियों के पाठ्यक्रमानुसार अध्ययन को पूरा करने में सहायता करते बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त करने में बहुत अधिक सहायता प्रदान करते है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के द्वारा इस क्षेत्र में किया गया प्रयास सराहनीय एवं अनुउत्कर्णीय है।

नवोदय विद्यालय समिति

भारत में शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के समान विद्यालय स्तर पर उत्कृष्ट एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के उदेश्य से तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने ग्रामीण प्रतिभाशाली विद्यार्थियों हेतु 1986 में जवाहर नवोदय विद्यालय की धारणा को साकार किया। साथ ही साथ इन विद्यालयों के संचालन के लिये नवोदय विद्यालय समिति भी नई दिल्ली में गठित की गयी प्रदेश स्तर पर नवोदय विद्यालयों के संचालन तथा मार्गदर्शन हेतु समिति के क्षेत्रीय कार्यालय भी स्थापित किये। चूकि इन विद्यालयों के स्थापना के पीछे शैक्षणिक उत्कृष्टता को श्रेष्ठतम बनाना ही उददेश्य रहा है, अतः इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को विद्यालय की सभी गतिविधियों के साथ–साथ उचित पाठ्य सामग्री तथा सूचनाये उपलब्ध कराना अनिवार्य है। इस दिशा में नवोदय विद्यालयों के पुस्तकालय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहें है। यहां के पुस्तकालयों में परंपरागत मुद्रित पाठ्य सामग्री के साथ ई–सूचना स्रोत तथा मल्टीमीडिया सूचना स्रोत भी उपलब्ध करा रहे हैं। नवोदय विद्यालय समिति के द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले ई–सूचना स्रोत, मल्टीमीडिया सूचना स्रोत एवं इनके द्वारा दी जाने वाली सूचना सेवायें इस प्रकार हैः

1. ब्लाग के माध्यम ई–सूचनाये उपलब्ध कराना जैसे– http://libraryjnvdang.weebly.com तथा http://jnvdang.org इत्यादि।
2. यू–ट्यूब वीडियो जैसे–

YouTube video :

1. https://www.youtube.com/watch?v=fXsHoZkFO-w - CAREER DRAMA
2. https://www.youtube.com/watch?v=nUxqHC_bL6E - DIGITAL INFORMATION
3. https://www.youtube.com/watch?v=YbtM2R44op4 - BACHHE KYON ASAFAL
4. https://www.youtube.com/watch?v=G4ptWtCu-Fg
5. https://www.youtube.com/watch?v=LZCUOPU20oU

रोजगार परामर्श हेतु जैसे–

6. http://my.yapp.us/MZK7E9

YAPP APP DEMO

3. पिछले वर्षो के डिजीटल/ई– प्रश्न पत्र /माडल/ सेम्पल प्रश्न पत्र

इन प्रश्न पत्रों के हल को भी पीडीएफ में तैयार कर विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध कराया जाता है।

4. नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा हेतु उपयोगी पुस्तक को ई–स्वरूप में उपलब्ध कराया जाता है।
5. नवोदय विद्यालय समिति के मुख्यालय के द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपयोगी पुस्तको एवं अन्य पाठ्य सामग्री को भी ई–स्वरूप में उपलब्ध कराया जाता है।
6. विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को आनलाईन ई– टिकट बुकिंग सुविधा का लाभ दिया जाता है।
7. शिक्षकों द्वारा विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकों को प्रकाशित करवाने के लिये प्रकाशकों को खोजने में सहायता प्रदान की जाती है।

इन समस्त सुविधाओं को लाभ मुख्य रूप नवोदय विद्यालय समिति के मुख्यालय के द्वारा दिया जाता है। विद्यालय स्तर पर ळभी अनेक ई–पुस्तक एवं मल्टीमीडिया सूचना सेवायें प्रदान की जाती है। इन सूचना स्रोतों का उपयोग करने के लिये नवोदय विद्यालयों में पर्याप्त अधोसंरचना की पर्याप्त उपलब्ध रहती है।

ई–सूचना सूचना की उपलब्धता एवं उपयांगिता के कारण नवोदय विद्यालयों के परीक्षा परिणाम अन्य विद्यालयों की तुलना में अधिक उत्कृष्ट रहता है।

राजीव गांधी शिक्षा मिशन

राजीव गांधी शिक्षा मिशन की शुरूआत 19 मार्च 2001 को हुई । इस मिशन में मुख्य मंत्री, शालेय शिक्षा मंत्री, सचिव शालेय शिक्षा, अनुसूचित जाति/आदिम जाति विभाग के प्रमुख, आयुक्त सूचना एवं प्रसारण विभाग संचालक लोक शिक्षण, अपर संचालक राजीव गांधी शिक्षा मिशन इत्यादि की सक्रिय सहभागिता होती है। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य कक्षा 1 से कक्षा 8 तक की एक निश्चित आयु सीमा 6 से 14 वर्ष के बच्चों को उपयोगी एवं प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करना है।

राजीव गांधी शिक्षा मिशन के अन्तर्गत शिक्षा को गुणवत्तायुक्त बनाने के लिये परंपरागत मुद्रित सूचना स्रोतो के साथ–साथ ई–सूचना स्रोत भी उपलब्ध कराये जाते है। प्रमुख ई–सूचना स्रोत इस प्रकार हैः

सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत उपलब्ध ई–सूचना स्रोत

Swachh Bharat: Swachh Vidyalaya

1. Booklet on Cleanliness for Primary Level
2. NDMA Guidelines - School Safety Policy
3. RTE 1st Year
4. RTE 2nd Year
5. RTE 3rd Year
6. RTE 4th Year

Inclusive Education of Children with Special Needs

Resource Teachers Training Material

1. Module 1 : Autism Spectrum Disorder
2. Module 2 : Deaf blindness
3. Module 3 : Multiple Disabilities
4. Module 4 : Visual Impairment
5. Module 5 : Cerebral Palsy
6. Module 6 : Hearing Impairment
7. Module 7 : Intellectual Disability (Mental Retardation)

Master Trainers Material

1. Module 1 : Inclusive Education
2. Module 2 : Including Children with Autism
3. Module 3 : Including Children with Cerebral Palsy
4. Module 4 : Including Children with Deafblindness
5. Module 5 : Including Children with Hearing Impairment

Confluence

1. Confluence February - 2016
2. Confluence June - 2014
3. Confluence August - 2013
4. Confluence January - 2012
5. Confluence January - 2011
6. Confluence July - 2011
7. Confluence January - 2010
8. Confluence July - 2010
9. Confluence January - 2009
10. Confluence July - 2009
11. Shagun newsletter, April - June 2017

स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के उपलब्ध ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया स्रोतः

1. यूट्यूब चैनल
2. आडियो
3. फोटो गैलरी

यूट्यूब चैनल

यूट्यूब चैनल में शैक्षणिक एवं शैक्षणेत्तर गतिविधियों के आडियो–वीडिया विद्यार्थियों, शिक्षको एवं शिक्षा जगत से जुड़े हुये समाज के अन्य व्यक्तियों के उपयोग हेतु निशुल्क अपलोड किये गये है। इस चैनल का लाभ उठाकर अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान कार्यो को सुचारू रूप से कर विद्यालयीन शिक्षा में उत्कृष्टता लायी जा सकती है।

आडियो

प्रोफेसन

इस आडियो के माध्यम से कक्षा दस एवं कक्षा बारहवी के बाद किसी भी व्यवसाय का चयन करने संबंधी सहायता के लिये सामग्री दी रहती है। व्यवसायों के बारें में समस्त जानकारी आडियो के माध्यम से मिल जाती है।

घर बैठे

घर बैठे आडियो के माध्यम से घर बैठे–बैठे प्रोढ़ पढ़ना–लिखना सीख सकते है। अपने शिक्षा के स्तर को उत्तम बनाकर समाज के जागरूक नागरिक बन सकते है। यह आडियो भी सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत लगातार अद्यतन किया जाता है।

एन एल एम बेच स्कूल जाने के बाद

इस आडियो को साक्षर भारत अभियान के अन्तर्गत संचालित किया जाता है। इस आडियो को प्रोढ़ बच्चो के स्कूल जाने के बाद सुनकर अपने बच्चों के शैक्षणिक स्तर को उत्तम बना सकते है। इस आडियों में बच्चों की शिक्षा के लिये आवश्यक बाते बतलायी जाती है।

लिटरेसी सांग

लिटरेसी सांग आडियो के माध्यम से अनपढ़ व्यक्तियों के लिये साक्षर बनाने के लिये रौचक तरीके से गीतमय प्रस्तुति दी गयी है।

फोटो गैलरी

फोटो गैलरी के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय प्रस्तुति की गयी है। इससे साक्षरता के प्रति जागरूगता एवं उत्प्रेरणा मिलती है।

निष्कर्ष

भारत जैसे विशाल देश में शिक्षा एक बहुत बडी चुनौती है। विद्यालयीन शिक्षा का क्षेत्र इसमें सर्वाधिक चुनौती वाला क्षेत्र है। इसमें भी समस्त विद्यार्थियों को सूचना स्रोत उलब्ध कराना एक चुनौती बडी चुनौती है। इस चुनौती का सामना करने में ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोत अधिक उपयोगी सिद्व हो रहे है। इनकी उपयोगिता को देखते हुये भारत का मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्ष मंडल, केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं नवोदय विद्यालय समिति अपना विशेष योगदान दे रहे है। विद्यार्थियों में इन सूचना स्रोतो के प्रति जागरूगता भी बढ रही है, एवं शिक्षा के सभी क्षेत्रों के साथ–साथ विद्यालयीन शिक्षा में भी उत्कृष्टता प्राप्त करने में ई–सूचना स्रोत एवं मल्टीमीडिया सूचना स्रोत अपना विशेष योगदान दे रहे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Baskaran R. Attitude of High School Teachers Toword Smart Classrooms in Reletionaship to their Technoboia and Challenges faced by them during instruction through Modern technology. Manonmaniam Sudaranar University 2015. Web 25 July 2018. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/200987

Benard, Ronald and Dulle, Frankwell. "Assesment of Access and Use of School Library resources in Morogo Municipality, Tanzania." (2014) Library Philosophy and Pratice. 1107.

Deepak, P C. Status of School Libraries in Pondicherry. Bharathidasan University. 2016. Web 27 July 2018. https://sg.inflibnet.ac.in/handle/10603/210360

Issac, Thanaseelan Manohar. An Evaluative study of collection development in school libraries: Special reference to Kendriya Vidyalaya Libraries in Tamil Nadu. Karuna Institute of Technology and Science. 2017. Web 11 April 2019 https://shodhganga.inflibnet.ac.in

Kumar, Krishna. Library Manual. New Delhi: Vikas Publishing. 2003 Print. Abell, J "The Impact on Student Achievement." School Library Bulletin. 5.1 (2002) 91. Web. 18 May 2018

Kenchkkanavar, Anand Y. "Type of E&Resources and its Utilities in Library." International Journal of Information Sources and Services. 1.2 (2014): 97-104. Web. 15 May 2018.

Laptop Distribution Scheme for Meritorious Student. http://Shikshaportal.mp.gov.in/Laptop/Default.aspx

Lynch, Clifford A. "Institutional Repositories: Essential Infrastructure for Scholarship in the Digital Age" ARL, no. 226 (2003): 1-7. Web 21 July 2018.

Nirmala, P J. An Evaluative Study of Collection Development in School Libraries. Special Reference to Kendriya Vidyalaya Libraries in Tamil Nadu. Karunya University. 2018. Web April 14. https://shodhganga.inflibnet.ac.in

Pushpanadham, Karanam. Development of an e Learning Programm for enhancing professionals of Secondary School Principle in the state of Assam. Maharaja Siyajirao University of Baroda. 2015 Web 15 Jun 2018. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/64285

R.K. Singh (2010) "Modern Libraries Network and Software Application" Delhi. University Publication

Shridhar, M S. Library Use and User Research: With Twenty case Studies. New Delhi: Concept Publishing Company. 2002. Print.

Swain, Dillip K . "Student keenness of use of e-Resources." The Electronic Library. 28.4 (2010): 581-591. Web. 18 May 2018 Emerald Group Publishing Limited

Singh, RK and Senger,Sunita Adhunic Pustakalaya me network avam software Ka anuproyog. Delhi. University Publication. 2010. Print.

शैक्षणिक सत्र 2016.17 हेतु लैपटाप तथा टेबलेट वितरण, https://www.cgstate.gov.in/web/guest/leptop_distribution_2016-17